The Research Dialogue

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन

प्रियंका तिवारी
शोधार्थी
शिक्षा संकाय
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर (मध्य प्रदेश)

सारांश :

शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से शिक्षण व्यवस्था के साथ–साथ शिक्षा समाज एवं संपूर्ण मानवता प्रभावित होती है। निश्चित ही शिक्षकों में कार्य संतुष्टि पाई जाएगी तो वह विद्यार्थियों अर्थात भावी पीढ़ी के कर्णधारों सर्वांगीण विकास में सहायक होंगे। शोधार्थी ने उद्देश्य के रूप में 1. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन करने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन 2. शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले पुरुष शिक्षक की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन 3. शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन करने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन निर्मित किए गए। साथ ही परिकल्पना के रूप में शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है निरूपित किए गए। अध्ययन के न्यादर्श के रूप में शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 400 (200 पुरुष शिक्षक व 200 महिला शिक्षक) को चयनित किया गया। उपकरण के रूप में अमर सिंह एवं शर्मा कृत्य संतोष मापनी का प्रयोग किया गया। आंकड़ों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया। निष्कर्षस्वरूप पाया गया कि अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई है। इसी प्रकार शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों में कोई सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही महिला शिक्षकों में शासकीय व अशासकीय विद्यालय के संदर्भ में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तावना

किसी भी छात्र के जीवन में माता–पिता के बाद शिक्षक सबसे बड़े शुभचिंतक होते हैं और वह उनके जीवन को सफल बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं। किसी भी शिक्षक को यदि शिक्षण व्यवसाय का चयन करना है तो ध्यान रखना होगा कि राष्ट्र के भावी निर्माता के विकास में कोई त्रुटि ना हो पाए, नौनिहालों के सर्वांगीण विकास का श्रेय प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से माता पिता के बाद शिक्षक का आता है।

शोधार्थी, जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर।

शिक्षा आयोग (1964) के अनुसार भारत का भारत निर्माण वर्तमान कक्षाओं में हो रहा है तथा कक्षाओं का भाग्य निश्चित रूप से अध्यापकों के हाथों में है। शिक्षक शिक्षार्थियों को सुगमता से सीखने में सहायता करें तथा कक्षा में व्यक्तिगत भिन्नता को ध्यान में रखते हुए योजना अनुसार शिक्षण किया जाए जिसमें शिक्षक व शिक्षार्थी दोनों ही क्रियाशील हो और यह कार्य तब तक चलता रहे, जब तक शिक्षार्थी भली प्रकार से सीख ना जाए।

व्यक्ति की कार्य संतुष्टि ना केवल व्यक्ति, बल्कि संबंधित संस्थान के विकास एवं निर्माण के लिए भी आवश्यक है। संबंधित शोध साहित्य भी यह इंगित करते हैं कि गोस्वामी, एम.(2013) ने अपनी शोधोंपरान्त पाया कि कार्य संतुष्टि का संबंध प्रतिभा दक्षता से भी है, कुमारी ऐम. (2017) ने निष्कर्ष स्वरूप पाया कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का उनके शिक्षण प्रभावशीलता से सार्थक धनात्मक संबंध है। रोकाडे,एम. के. (2014) ने शोध उपरांत पाया कि जूनियर कॉलेजों में कार्यरत विज्ञान महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि कला महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से श्रेष्ठ पाई गई। एडवन एस.आर.(2015) ने निष्कर्ष निकाला है कि उम्र, शिक्षण अनुभव तथा मासिक वेतन सकारात्मक रूप से कार्य संतुष्टि को प्रभावित करता है। यह सर्वविदित है कि समाज का निर्माण या उत्थान प्रभावशाली शिक्षक ही कर सकता है। प्रभावशाली व्यक्तित्व में कहीं ना कहीं शिक्षकों की अपने कार्य के प्रति संतुष्टि का प्रभाव पड़ता है। अर्थात शिक्षकों की कार्य संतुष्टि से तात्पर्य किसी शिक्षक का अपने शिक्षण कार्य के प्रति दृष्टिकोण से है।

यह शिक्षक के स्वयं के कार्य के प्रति रवैया व आंतरिक स्थिति से संबंधित है। शिक्षक अपने व्यवसाय में किस सीमा तक संतुष्ट है। संतुष्टि शिक्षक से तात्पर्य है ऐसे शिक्षक से है जो अपनी योग्यताओं के आधार पर शिक्षण अधिगम परिस्थितियों व सुविधाओं को प्राप्त करते हुए आनंद व संतोष का भाव महसूस करते हैं। जो शिक्षक अपने शिक्षण व्यवसाय से संतुष्ट होगा व शिक्षण कार्य में उनसे ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों का प्रायः शैक्षिक विकास भी उत्तम होगा। शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को प्रभावित करने वाले निम्न कारक है, बाहय कारक मनोवैज्ञानिक कारक, आर्थिक कारक एवं सामुदायिकता राष्ट्रीयता। जिसमें मनोवैज्ञानिक कारक के अंतर्गत शिक्षक की बुद्धि, व्यक्तित्व रचनात्मकता, प्रोत्साहन की भावना, प्रेरणा आदि। आर्थिक कारक के अंतर्गत

शिक्षक को मिलने वाला आय, वेतन भत्ता, पदोन्नति, सुविधाएं, सुरक्षा निधि आदि। सामुदायिक राष्ट्रीयता की भावना के अंतर्गत देश के प्रति प्रेम, विद्यार्थियों के लिए कल्याण की भावना, सहयोग की भावना, से है। इसी प्रकार आंतरिक कारक के अंतर्गत शिक्षकों का स्वास्थ्य, उनकी कार्य दशाएं, मनोरंजन के लिए उनके पास समय, पर्याप्त अवकाश, सम्मान पूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण।

कार्य संतुष्टि के लक्षण

1– शिक्षक स्वयं अमुक कार्य की स्थिति प्रति भावनात्मक प्रक्रिया है जिसे देखा नहीं जा सकता इसे केवल अनुमान लगाया जा सकता है।

2– कार्य संतुष्टि वह सीमा है जिसमें शिक्षक के शैक्षिक वातावरण में वह अपने शिक्षण व्यवसाय में आवश्यकतानुसार स्वयं की अपेक्षाओं की पूर्ति कर पाता है, वह उन्हें नौकरी में कितना अच्छा परिणाम देती है वह सहज महसूस कराती हो।

3–प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से शिक्षक की अभिवृत्ति में दृष्टिगोचर होती है। अभिवृत्ति के रूप में तीन तत्व संज्ञानात्मक भावात्मक एवं क्रियात्मक या व्यवहारिक। संज्ञानात्मक पक्ष का पता मुख्य पद से लगा सकते हैं''मेरा काम मुझे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है'' में दिखता है। भावात्मक पक्ष ''मैं अपनी नौकरी में धशिक्षण कार्य में अच्छा महसूस करता हूं मुझे अपना कार्य बहुत पसंद है। क्रियात्मक पक्ष ''मैं अपना कार्य सर्वश्रेष्ठ प्रकार से करूंगा''कार्य संतुष्टि में उपर्युक्त तत्व शामिल है।व्यापक रूप में देखा जाए तो यदि शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति असंतुष्टि है तो संभवतः इसका कारण व्यक्तिगत व संगठनात्मक कारक हो सकते हैं। जो कि निम्न प्रकार से हैं–

1– संगठनात्मक कारक

जब शैक्षिक वातावरण में कार्य विभाजन स्पष्ट ना हो।

जब संगठन में विश्वास की कमी देखी जाए।

जब सदस्यों के मध्य पक्षपात किया जाता हो।

जब समरसता की भावना अर्थात टीम भावना ना हो।

जब किसी कार्य को पूर्ण न कर पाने के कारण या कम कार्य करने पर सजा ना मिलती हो।

जब कार्य का मूल्यांकन नियमित ना किया जाए।

जब सभी सदस्यों के मध्य सहयोग की भावना ना हो व एक दूसरे को सकारात्मक भाव ना हो।

व्यक्तिगत कारक

अमुक शिक्षक में नेतृत्व गुण ना हो।

अमुक शिक्षक में योग्यता की कमी निर्णय लेने में कमी एवं आत्मनिर्भरता का गुण ना हो अर्थात उनके मन में कुछ कर गुजरने की अभिलाषा ना हो।

अमुक शिक्षक की उस विशेष क्षेत्र विषय में रुचि व लगन ना हो।

यदि उपर्युक्त बिंदुओं में कमी लाई जाए तो निश्चित तौर पर कार्य संतुष्टि में वृद्धि देखी जा सकती है। शिक्षक की कार्य संतुष्टि से तात्पर्य उनके शिक्षण व्यवसाय में कितना संतुष्ट हैं से है शिक्षण व्यवसाय विद्यालय वातावरण या शैक्षिक वातावरण में देखने को मिलता है। प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने विद्यालय वातावरण में शिक्षकों द्वारा शिक्षण व्यवसाय के प्रति कार्य संतुष्टि से लिया है। विभिन्न प्रबंध तंत्र द्वारा संचालित विद्यालय मुख्यतः शासकीय,अशासकीय एवं अनुदानित विद्यालय से है। जिसमें शिक्षकों की विभिन्न प्रबंध तंत्रों के आधार पर शैक्षिक वातावरण, कार्य दशाएं, वेतन भत्ता, पदोन्नति, अवकाश की सुविधा, सुरक्षा निधि, सौहार्द्र पूर्ण वातावरण भिन्न–भिन्न देखने को मिलती है। अतः शोधार्थी ने शासकीय एवं अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में क्या भिन्नता पाई जाती है जानने हेतु इस शोध समस्या का चयन किया।

समस्या कथन

''शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों के कार्य संतुष्टि का अध्ययन''

समस्या कथन में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1. शासकीय विद्यालय

पूर्णतया राज्य सरकार द्वारा संचालित विद्यालय इनका पूर्ण खर्च राज्य सरकार उठाती है और उसका प्रशासन माध्यमिक शिक्षा निदेशालय एवं जिला विद्यालय निरीक्षक के माध्यम से नियन्त्रित होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में म.प्र. बोर्ड द्वरा मान्यता प्राप्त सरकारी विद्यालय को लिया गया है।

2. अशासकीय विद्यालय

स्ववित्तपोषित विद्यालय ऐसे विद्यालय छात्रों से प्राप्त शुल्क से विद्यालय का समस्त व्यय वहन करते हैं सरकार इन्हें कोई अनुदान नहीं देती है। इनका प्रशासन और शिक्षक की नियुक्ति प्रबंधक द्वारा की जाती है हालांकि इन्हें सरकार द्वारा मान्य पाठ्यक्रम परीक्षा प्रणाली तथा अन्य मानक स्वीकार करने होते है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध में म.प्र. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त स्ववित्तपोषित उच्चतर माध्यमिक विद्यालय को लिया गया है।

3. उच्च माध्यमिक विद्यालय

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से अभिप्राय उन विद्यालयों से जहाँ कक्षा 11 वीं व 12 वीं की शिक्षा विद्यार्थियों द्वारा ग्रहण की जाती है। इस स्तर पर समान्य रूप से 16 से 18 वर्ष के मध्य के छात्र–छात्रायें शिक्षा ग्रहण करते हैं।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्चतर माध्यमिक विद्यालय से तात्पर्य ग्वालियर शहर के अंतर्गत आने वाले शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से है जिसमें कक्षा 11 वीं में अध्ययनरत विद्यार्थियों को सम्मिलित किया है।

4. शिक्षक

शिक्षा शब्द कोष (2005) के अनुसार किसी शिक्षा संस्था में बालकों या विद्यार्थियों को पढाने का कार्य करने व्यक्ति, इसे स्वयं उपयुक्त शिक्षा प्राप्त करना तथा किसी प्रशिक्षण शिक्षण संस्था से व्यवसायिक प्रशिक्षण लेना आवश्यक होता है।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन में शिक्षक से तात्पर्य किसी मान्यता प्राप्त संस्था में अध्यापनरत हो तथा शिक्षार्थी की अधिगम प्रक्रिया में सहायक हो।

5. कार्य सन्तुष्टि

अंजूनेथल (1970) के अनुसार ''कार्य सन्तुष्टि के अंतर्गत कार्य को पसंद करना, कार्य भार करना एवं कार्य के साथ जुड़ी आकांक्षाओं को करना सम्मिलित है''।

स्कैन्डिर एवं सिडे (1975) के अनुसार ''कार्य सन्तुष्टि पर्याप्त मन की भावना सम्बन्धी कार्य की विद्यमान स्थिति में व्यक्तिगत मूल्यांकन है साथ ही आय एवं सुरक्षा कार्य का परिणाम है। कार्य संतुष्टि आन्तरिक अनुभव का एक स्वरूप है''।

कार्यात्मक परिभाषा

प्रस्तुत शोध अध्ययन के संदर्भ में कार्य संतुष्टि से तात्पर्य शिक्षक के अपने विद्यालयी कार्य आन्तरिक एवं बाहय कारकों के प्रति संतुष्टि से है। कार्य संतुष्टि शिक्षकों के लिए एक प्रकार की प्रेरणा है जो उन्हें अपना कार्य सम्पादित करने में आनन्द एवं सुख की अनुभूति कराती है।

अध्ययन के उद्‌देश्य

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
2. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
3. शासकीय एवं अशासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पनाएं

1. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. शासकीय एवं अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन

प्रस्तुत अध्ययन में कानपुर शहर के 30 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 400 शिक्षकों को शामिल किया गया ।

न्यादर्श

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी ने उत्तर प्रदेश इलाहाबाद बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त 30 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के 400 शिक्षकों का चयन किया।

उपकरण

प्रस्तुत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के मापन हेतु शोधार्थी ने अमर सिंह एवं टी. आर शर्मा द्वारा निर्मित कार्य संतुष्टि मापनी का प्रयोग किया।

सांख्यिकीय प्रविधि

प्रस्तुत शोध के निमित्त शोधार्थी द्वारा प्रदतों के विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–मान का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

1. शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

चयनित न्यादर्श में सम्मिलित शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन एवं टी–मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका 2 में प्रस्तुत की गयी है

तालिका संख्या 1

शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि के संबंधी प्राप्तांकों का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान व टी-मान

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	200	76.54	16.42	2.98	<0.01
अशासकीय	200	67.26	23.33		

तालिका 1 में प्रदर्शित कार्य संतुष्टि के सम्बन्ध में प्राप्त प्राप्तांको के अवलोकन से विदित होता है कि शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के परिप्रेक्ष्य में प्राप्त मध्यमान मूल्य में 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक अंतर है। शासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों में कार्य संतुष्टि, अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक पाई गई है, जिसका कारण वेतन समय पर मिलना, नौकरी स्थायित्व, प्राप्त पद के कारण समाज में उच्च प्रतिष्ठा, पदोन्नति सुरक्षा निधि, किसी दुर्घटना शादी समारोह आदि में या अन्य किसी कारणवश अवकाश लेने पर किसी भी प्रकार का आर्थिक व मानसिक तनाव नहीं झेलना पड़ता है। नौकरी जाने का भय नहीं सताता है। **कपूर, अर्चना (2007)** ने भी अपने अध्ययन में निष्कर्षस्वरूप पाया कि शासकीय विद्यालयों के शिक्षकों की कृत्य–संतोष अशासकीय विद्यालय की तुलना में उच्च होता है।

अतः उक्त उद्देश्य से निर्मित परिकल्पना **''शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है''** को अस्वीकार किया जाता है।

2. **शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों की पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन**

चयनित न्यादर्श में सम्मिलित शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी-मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका 2 में प्रस्तुत की गई है–

तालिका संख्या 2

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	77.26	15.38	4.75	<0.01
अशासकीय	100	68.68	16.70		

तालिका क्रमांक 2 में प्रदर्शित परिणाम स्पष्टतः व्यक्त कर रहे है कि शासकीय विद्यालयों के पुरूष शिक्षकों की कार्य–संतुष्टि संबंधी प्राप्त मध्यमान उच्च है जो कि 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः स्पष्ट होता है कि शासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले शिक्षकों का शैक्षिक वातावरण अधिकांशतः सहयोगात्मक वातावरण, विद्यार्थियों की संख्या अपेक्षाकृत कम, कार्य दशाएं अनुकूलित, अभिभावकों के द्वारा जिज्ञासात्मक प्रश्न बहुत कम, नौकरी स्थायीत्व, सम्मानजनक वेतन, आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक तनाव कम आदि विशेषताओं के कारण कार्य संतुष्टि अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाली शिक्षकों की तुलना में अधिक पाई जाती है। अतः शोध से संबंधित परिकल्पना **''शासकीय व अशासकीय माध्यमिक विद्यालय में कार्यरत पुरूष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है''**को अस्वीकृत किया जाता है।

3 **शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन**

अध्ययन में सम्मिलित शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने हेतु मध्यमान, प्रामाणिक विचलन, टी-मान ज्ञात किया जो कि निम्न तालिका 3 में प्रस्तुत की गई–

तालिका संख्या 3

शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि संबंधी प्राप्तांको का मध्यमान, प्रामाणिक विचलन मान व टी-मान

विद्यालय प्रकार	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन मान	टी-मान	सार्थकता स्तर
शासकीय	100	75.82	16.46	3.19	<0.01
अशासकीय	100	65.84	16.27		

तालिका 3 पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के संदर्भ में प्राप्त टी–मान 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में प्रबंधन द्वारा नौकरी कब तक चलेगी या कब निकाल दिया जाएगा इस समस्या से हमेशा डरी हुई रहती हैं। साथ ही मासिक वेतन कम या कभी–कभी अनियमित होता है, अधिकतर संस्थाओं में अवकाश कम दिए जाते हैं कभी–कभी आवश्यकता पड़ने पर अवकाश ले लिया जाए तो वेतन में से काट दिया जाता है, जिसके कारण उनका मन हमेशा खिन्न रहता है। संभवतः शासकीय विद्यालयों की अपेक्षा अशासकीय विद्यालयों की महिला शिक्षकों में कार्य संतुष्टि कम देखी जाती है। उक्त तथ्य की पुष्टि माथुर, मधु (2015) के शोध अध्ययन से भी हो रही है। अतः उद्देश्य से निर्मित परिकल्पना **"शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है"** को अस्वीकार किया जाता है।

निष्कर्ष

अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कार्य संतुष्टि अधिक पाई गई है। इसी प्रकार शासकीय व अशासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष शिक्षकों में कोई सार्थक अंतर पाया गया। साथ ही महिला शिक्षकों में शासकीय व अशासकीय विद्यालय के संदर्भ में सार्थक अंतर पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

किसी भी शोध अध्ययन का उपयोग शिक्षक, शोधकर्ता, प्रशासक योजनाओं से जुड़े लोग तथा शिक्षा के लिए नीति बनाने वाले व्यक्तियों पर निर्भर करता है। क्या शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के मध्य कार्य संतुष्टि में कोई अंतर है? साथ ही शासकीय व अशासकीय विद्यालयों में अध्यापन कराने वाले पुरुष शिक्षकों में की कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर है इसी प्रकार शासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला

शिक्षकों की अपेक्षा अशासकीय विद्यालयों में कार्यरत महिला शिक्षकों में किसकी कार्य संतुष्टि श्रेष्ठ है? शोध का निष्कर्ष इस ओर इंगित करता है कि शिक्षकों की कार्य संतुष्टि को ध्यान में रखकर उनकी कार्य स्थिति आदि में सुधार किया जाए जिससे उनकी कार्य संतुष्टि से शिक्षा व्यवस्था को लाभान्वित किया जा सके। संस्था निर्माण के लिए संस्था के प्रति सम्मान तथा संस्था में काम करने के गौरव का अभाव जरूरी है जो बिना कार्य संतुष्टि के संभव नहीं है साथ ही शिक्षकों के प्रभावी विकास के लिए उनकी कार्य संतुष्टि को प्राथमिक देना बहुत आवश्यक है। प्रगतिवादी समाज एवं व्यवस्था में शिक्षकों से आदर्शवादी अपेक्षाएं उनकी कार्य संतुष्टि को प्रभावित करते हैं, अतः अपेक्षाओं के अनुकूल उनके कार्य संतुष्टि का विशेष ध्यान रखा जाए।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

ओलाडेवो,एस.ए.(2001) एव इन्वेस्टिगेशन ऑफ जॉब सेटिसफेक्शन एण्ड विथ सेटिस्फेक्शन एमांग द टीचर्स इन सेकेण्ड्री इन्स्टीट्यूशन इन नाइजिरिया, पी.एच.डी. एजुकेशन, एब्सट्रेक्ट इन्टरनेनेशनल वैल्यूम 62, पृ. 1026

राबर्ट एवं फ्रांसिस (2002) इन्साइक्लोपीडिया ऑफ एजूकेशन रिसर्च, ए प्रोजेक्ट ऑफ द अमेरिकन एजूकेशन रिसर्च एसोसिएशन, फर्स्ट एडिशन, पृ. 645

व्यास, एम.पी. (2001) द जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ प्राइमरी टीचर्स विथ रिफ्रेन्स टू द सेक्स, मेरिटल स्टेट्स एण्ड एजूकेशनल क्वालिफिकेशन, पी.एच.डी. एजूकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

जोशी, हरीका एल. (2004) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ जॉब स्ट्रेस, जॉब इनवाल्वमेन्ट एण्ड जॉब सेटिसफेक्शन ऑफ बी.एड. टीचिंग एण्ड बी.एड. ट्रेन्ड टीचर्स ऑफ राजकोट सौराष्ट्र ऑफ गुजरात स्टेट, पी.एच.डी. एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट

पब्ला (2012) ए स्टडी ऑफ जॉब सेटिस्फेक्शन अमांग टीचर्स ऑफ प्रोफेशनल कालेज इन पंजाब, इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च, वाल्यूम 10 (2012), अक्टूबर 2012

जेम्स एण्ड हन्नाह डब्लू. वचिरा (2013) जॉब सेटिस्फेक्शन फैक्टर्स दैट इनफ्लूएन्स द परफारमेन्स ऑफ सेकेण्ड्री स्कूल प्रिंसिपल्स इन देयर एडमिनिस्ट्रेटिव फंक्शन इन मोमबासा डिस्ट्रिक्ट केन्या, इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एजुकेशन एण्ड रिसर्च 12 फरवरी 2013

सिंह, जयप्रकाश (2013) रिलेशनशिप बिट्वीन टीचिंग कॉम्पीटेंस एण्ड सेटिस्फेक्शनः ए स्टडी एमांग टीचर एजुकेटर्स वर्किंग इन सेल्फ फाइनेसिंग कालेज इन उत्तर प्रदेश इण्डियन जर्नल ऑफ रिसर्च 35 2013

अग्रवाल, श्वेता (2009) विभिन्न प्रबंध तंत्रों द्वारा संचालित उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण शिक्षक व्यवहार, शिक्षक प्रभावशीलता कृत्य संतोष एवं विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन जनवरी 2011 चतुर्थ अंक पृ. 74

गुप्ता, मधु (2008) प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की प्रभवशीलता का अध्ययन एस.एस. श्रीवास्तव सम्पादक, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका लखनऊ इण्डियन इन्स्टीटयूट ऑफ एजूकेशनल रिसर्च 27 (1) पृ. 31–35

मित्तल, संतोष (1995) शैक्षिक तकनीकी एवं कक्षा कक्ष प्रबन्ध राजस्थान, हिन्दी ग्रंथ अकादमी।

शर्मा, संजय (2006) विद्यालयों शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं यौनभेद के परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व कारकों का अध्ययन एम.एड अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध डी.ई.आई. आगरा ।

दास ऊषा ई (1976) कृत्य संतोष व्यावसायिक स्तर एवं आकांक्षा स्तर, अप्रकाशित लघुशोध प्रबंन्ध शिक्षा सन्दर्भित डी.ई.आई.आगरा।

द्विवेदी कुन्ती (1986) प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों में कृत्य संतोष का अध्ययन, अप्रकाशित लघुशोध प्रबन्ध (शिक्षा) संदर्भित डी.ई.आई.आगरा।

डीवैलेन्टिनों, जेसिका (2010) इफैक्ट और टीचर्स ऑन जॉब सैटिस्फैक्सन, डिजर्टेशन एब्सट्रेक्स इन्टरनेशनल वॉल्यूम 66 नं. 2 अगस्त 2010 पृ. 120

गुप्ता, किरन एवं निशा बटू (1978) उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों में कृत्य संतोष का अध्ययन अप्रकाशित लघुशोध प्रबंध संदर्भित डी.ई.आर. आगरा

Han .G. (2002) Teacher student Interaction A study of Jurgen Habermas's Communicative rationality An educational interpretation, Ph.D Univ of Illinois at Urban Champaign 2002, 260 pp as cited in dissertaiion Abstract Internation Vol 63, No. 2

जीनिनकेई, टालबट (2009) द रिलेशनशिप विटवीन आब्जरएबिल टीचिंग इफैक्टिवनेस बिहेवियर्स एण्ड पर्सनेलिटी टाइम्स इन ए सैम्पल ऑफ अरबन मिडिल स्कूल टीचर्स, डिजरटेशन एब्सट्रैक्टस इन्टरनेशनल वॉल्यूम 66, नं. 5 नवम्बर 2009 पृ. 101

Kumar, P & Mutha, D.N. (1980) An Attitudinal and personality study of effective teachers, Ph.D Psychology, Jodh Univ. 1980

कुमार अरविन्द (2010) अशासकीय एवं विद्या भारतीय द्वारा संचालित माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की व्यावसयिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, भारतीय शिक्षा शोध पत्रिका वर्ष 29 अंक –2 जुलाई दिसम्बर 2010 पृ. 39

कुमार ज्योतिन्द्र (2013) एकेडमिक सैटिस्फैक्शन एण्ड मैन्टल हैल्थ स्टेट्स ऑफ टीचर ट्रेनीज शोध समीक्षा ओर मूल्यांकन, फरवरी 2013 पृ. 22

कुमार नरेश (2003) बदलते सामाजिक परिवेश शिक्षा का स्वरूप और शिक्षक का दायित्व NCERT नई दिल्ली अक्टूबर 2003

नायल, रेखा (2005) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ ऑर्गनाजेशनल क्लाईमेट एण्ड जॉब सैटिसफैक्सन ऑफ टीचर्स फंक्सनिंग ऑफ द प्रिसीपल ऑफ गवर्मेंट एण्ड नॉन गवर्मेंट अपर प्राइमरी स्कूल्स ऑफ आगरा डिस्टिक, आगरा, डॉ. भीमराव अम्बेडकर यूनिवर्सिटी।

शर्मा, प्रवनी (2010) अ स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीटयूड इन रिलेशन टू जनरल टीचिंग कॉम्पीटैन्सी प्रोफेशनल टीचिंग एण्ड एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ बी.एड. प्यूपिल टीचर्स जामिया मिलिया इस्लामिया यूनिवर्सिटी ।

यादव, अवधेश कुमार (2007) सरकारी तथा गैर सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन, सुभाष शर्मा परिप्रेक्ष्य नई दिल्ली राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विवि. 14 (2) पृ. 103—107

रविकान्त, (2011) ''ए स्टडी ऑफ टीचर एप्टीटयूड एण्ड रिस्पोंसिवलिटी फिलिंग आफ सेकेण्ड्री स्कूल टीचर इन रिलेशन टू देयर सेक्स एण्ड लोकेल एकेडमिक रिसर्च इन्टरनेशनल, वा 1 (2)

.

THE RESEARCH DIALOGUE

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed / Refereed Research Journal
ISSN: 2583-438X
Volume-2, Issue-1, April-2023
www.theresearchdialogue.com
Certificate Number-April-2023/28

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

प्रियंका तिवारी

for publication of research paper title

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का अध्ययन

Published in 'The Research Dialogue' Peer-Reviewed / Refereed Research Journal and E-ISSN: 2583-438X, Volume-02, Issue-01, Month April, Year-2023.

Dr.Neeraj Yadav
Executive Chief Editor

Dr.Lohans Kumar Kalyani
Editor-in-chief

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.theresearchdialogue.com